सामाजिक संरचना

समाजशास्त्र में सबसे पहले हर्बर्ट स्पेंसर ने सामाजिक संरचना शब्द का प्रयोग अपनी पुस्तक "प्रिंसिपल ऑफ सोशियोलॉजी" में सन् 1885 में किया था।

जिस प्रकार हमारे शरीर की संरचना होती है जो हमारे शरीर के अंगो जैसे - हाथ पैर पेट, नाक कान आँख इत्यादि मिलकर बनती है, उसी प्रकार से सामाजिक संरचना का तात्पर्य समाज की इकाइयों की क्रमबद्धता से होता है। सामाजिक इकाइयाँ जैसे — समूह, समितियाँ, संस्थाएँ, परिवार, सामाजिक प्रतिमान आदि की क्रमबद्धता को सामाजिक संरचना कहते हैं। संरचना शब्द से तात्पर्य इकाइयों की क्रमबद्धता से है। इकाइयों का एक ऐसा प्रतिमानित संबंध जो अपेक्षाकृत स्थिर होता है संरचना कहलाता है।